डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

"गाँधी और 1980 के बाद का हिंदी – गुजराती साहित्य" विषयक संगोष्ठी सम्पन्न

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली और गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में महात्मा गाँधी के 150 वें जन्मवर्ष के अवसर पर दि. 10-05-2019 से11-5-19 तक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय में किया गया । जिसका केंद्रीय विषय था "गाँधी और 1980 के बाद का हिंदी-गुजराती साहित्य" । उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य के रूप में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने संगोष्ठी के उद्देश्य एवं महत्त्व को समझाते हुए महात्मा गाँधी के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला, और साथ ही बताया कि महात्मा गाँधी ने केवल राजनीति ही नहीं अपितु हर क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी है । इसके अतिरिक्त उन्होंने महात्मा गाँधी के ग्राम्य प्रेम एवं उनकी ग्राम्य संकल्पना की ओर भी सदन का ध्यान आकृष्ट किया कि किस प्रकार महात्मा गाँधी कहते थे कि गाँवों का विकास ही सही अर्थों में देश का विकास है।

भूमिका के रूप में गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष आलोक गुप्त ने महात्मा गाँधी के समाज-निर्माण में अवदान एवं उनके युग पुरुष बनने की पृष्ठभूमि को संदर्भित करते हुए बताया कि महात्मा गाँधी यंत्रों का नहीं अपितु यंत्रों के दुरुपयोग का विरोध करते थे। साथ ही उन्होंने गुजराती एवं हिंदी उपन्यासों का हवाला देते हुए अपनी बात रखी, जिसमें गिरिराज किशोर, रघुवीर चौधरी आदि के उपन्यासों एवं कृष्णमोहन झा तथा प्रमोद जोशी आदि की कविताओं के माध्यम से साहित्य में महात्मा गाँधी की सक्रियता एवं उनकी उपस्थिति को रेखांकित किया ।

उद्घाटन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी और गुजराती ही नहीं अपितु कन्नड साहित्य भी महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित रहा है एवं उन पर स्वयं महात्मा गाँधी के विचारों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है ।

आरंभिक वक्ता के रूप में साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि महत्मा गाँधी की निर्मिति में भक्त कवियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उनका पूरा का पूरा व्यक्तित्व भक्त कवियों की मूल्य-चेतना से संचालित होता रहा है। भक्त कवियों से जिन मूल्यों को महत्मा गाँधी ने ग्रहण किया उनमें सत्य, अहिंसा एवं प्रेम पर सबसे अधिक बल दिया गया है।

साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि महात्मा गाँधी के विराट व्यक्तित्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जितनी कविताएँ महात्मा गाँधी पर लिखी गयी हैं उतनी किसी अन्य व्यक्ति पर नहीं लिखी गईं । महत्मा गाँधी के विचार मौलिक थे और 1960 के बाद जिस "मोहभंग" की चर्चा साहित्य में की जाती है भारतीय जनता का वह मोह महात्मा गाँधी के प्रति था। जिस स्वप्न को लेकर महात्मा गाँधी ने भारत की कल्पना की थी जब वह पूर्ण नहीं हुआ तो कवियों में मोहभंग

(जारी...)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

की स्थिति पैदा होने लगी। प्रेमचंद के जीवन पर महात्मा गाँधी के प्रभाव को रेखांकित करते हुए उन्होंने बताया कि प्रेमचंद, गाँधी के सबसे बड़े भक्त थे और प्रेमचंद महात्मा गाँधी के स्वराज के फायदे जनता को समझाने का प्रयास कर रहे थे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात गुजराती लेखक, कवि एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य रघुवीर चौधरी ने गुजराती उपन्यासों के हवाले से महत्मा गाँधी के प्रभाव को रेखांकित किया। उन्होंने नारायण देसाई के उपन्यास "अग्निकुंड" की विशेष चर्चा की। साथ ही बताया कि जिस प्रकार मोरारी बापू रामकथा करते हैं उसी प्रकार नारायण देसाई ने भी 'गाँधी कथा' प्रारंभ की थी। इससे महात्मा गाँधी की उपस्थिति एवं उनकी महत्ता का पता चलता है। सत्र की अध्यक्षता गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति एस.ए. बारी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी के वक्तव्य की सराहना करते हुए बताया की तत्कालीन समाज हो अथवा आज का समय, महात्मा गाँधी का हस्तक्षेप उसमें अवश्य रहा है। महात्मा गाँधी ने पूरे समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह संगोष्ठी महात्मा गाँधी को जानने एवं समझने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। सत्र का सञ्चालन साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र- "गाँधी और 1980 के बाद की हिंदी-गुजराती कविता'- में प्रथम वक्ता के रूप में वरिष्ठ आलोचक रेवती रमण ने हिंदी कविता पर महात्मा गाँधी के प्रभाव को रेखांकित किया। जिसमें उन्होंने बताया कि गाँधी जी आशावादी इंसान थे और यही आशावादिता हिंदी कविता में भी दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने ज्ञानेंद्रपति इत्यादि कवियों के माध्यम से अपनी बात रखी। अगले वक्ता के रूप में युवा आलोचक पंकज चतुर्वेदी ने गाँधी और 1980 के बाद की हिंदी कविता पर अपनी बात रखी। उन्होंने शांतिलाल बसु के संस्मरण से अपनी बात का प्रारंभ किया कि वे कहते थे कि गाँधी के पास एक लोटा था जिसका ढक्कन पीपल के पत्ते की आकृति का था।जिसके बारे में वे कहते थे कि ये गाँव के लोहार ने गढ़कर दिया है। यहाँ गाँधी जी कि सौन्दर्यदृष्टि एवं उनकी कलात्मक रुचि के साथ-साथ स्वदेश-प्रेम भी स्पष्ट झलकता है। उन्होंने अपने आलेख में केदारनाथ सिंह की कविता 'भिखारी ठाकुर', त्रिलोचन की कविता 'चंपा काले-काले अक्षर नहीं चीन्हती', अरुण कमल, वीरेन डंगवाल आदि की कविताओं के माध्यम से हिंदी कविता पर महात्मा गाँधी के प्रभाव को रेखांकित किया। गुजराती साहित्यकार मणिलाल ह. पटेल ने गाँधी और गुजारती कविता पर अपना आलेक प्रस्तुत किया। उन्होंने रघुवीर चौधरी, प्रवीन गढ़वी एवं नीरव पटेल की कविताओं के हवाले से अपनी बात स्पष्ट की। इस सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ हिंदी कवि अरुण कमल ने की। अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने बताया कि महात्मा गाँधी केवल राजनीतिज्ञ नहीं थे अपितु वे दार्शनिक भी थे। उन्होंने बताया कि महात्मा गाँधी जिस जीवन-मूल्य का आजीवन पालन करते रहे वह दया के भाव का था। अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने तुलसी के दोहे 'दया धर्म को मूल है' को भी उद्दृत किया।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र "गाँधी और 1980 के बाद हिंदी गुजराती उपन्यास" में प्रथम वक्ता विनोद तिवारी ने हिंदी उपन्यासों में महात्मा गाँधी के प्रभाव एवं उनके व्यक्तित्व की झलक पात्रों के किस रूप में आई है, इस पर महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने 'रंगभूमि' उपन्यास के सूरदास, 'मैला आँचल' के बावनदास, 'रागदरबारी' के लंगड़, इत्यादि पात्रों के उदाहरण से अपनी बात स्पष्ट की। द्वितीय वक्ता के रूप में हसित

(जारी...)

मेहता ने गाँधी और गुजराती उपन्यास पर अपनी बात केन्द्रित की। जिसमें उन्होंने बताया कि गाँधी जी जिस अस्पृश्यता के खिलाफ आजीवन लड़ते रहे उसके प्रभाव गुजराती उपन्यासों में भी देखने को मिलते हैं। महात्मा गाँधी कई उपन्यासों में केंद्रीय चरित्र के रूप में भी आते हैं। 'गाँधी और हिंदी उपन्यासों में हाशिये का समाज' विषय पर वरिष्ठ आलोचक के.वनजा ने महत्त्वपूर्ण आलेख प्रस्तुत किया । उन्होंने कहा कि गाँधीजी की विचारधारा बहुलता की विचारधारा है। वे सभी को साथ लेकर चलने की बात करते हैं। गिरिराज किशोर कृत 'पहला गिरमिटिया', चित्रा मुद्गल कृत 'आंवा' आदि उपन्यासों के हवाले से उन्होंने अपनी बात स्पष्ट की । सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ गुजराती लेखक रघुवीर चौधरी ने की जिसमें आपने सभी वक्ताओं के वक्तव्य पर गंभीर टिप्पणी करते हुए सभी की सराहना की।

संगोष्ठी के दूसरे दिन का प्रथम सत्र 'गाँधी और 1980 के बाद की हिंदी गुजराती कहानी' पर केंद्रित रहा, जिसमें गाँधी और गुजराती कहानी पर बात करते हुए गुजराती लेखिका शरीफा विजलीवाला ने बताया कि दलितों के संघर्ष की पीड़ा 1980 के बाद की गुजराती कहानियों में मुखर रूप से देखने को मिलती है। उन्होंने मोहन परमार, दलपत चौहान, हरीश मंगलम, दशरथ परमार आदि कहानीकारों की कहानियों के माध्यम से आपने अपनी बात स्पष्ट की। द्वितीय वक्ता के रूप में युवा आलोचक संजीव दुबे ने गाँधी और 1980 के बाद की हिंदी कहानी पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने महात्मा गाँधी की पुस्तक 'हिंद स्वराज' का जिक्र करते हुए उसके महत्त्व एवं हिंदी कहानियों पर उसके प्रभाव को रेखांकित किया। साथ ही उन्होंने स्वयं प्रकाश की कहानी 'पार्टीशन', उदय प्रकाश की कहानी 'मोहनदास' एवं कमल की कहानी 'नमो सत्यम' तथा अन्य कहानियों के आलोक में अपनी बात रखी। सत्र की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ गुजराती साहित्यकार मोहन परमार ने 'गाँधी और गुजराती कहानी में हाशिये का समाज' विषय पर अपना व्याख्यान केन्द्रित किया। उन्होंने अपने आलेख में बताया कि गाँधीजी आजीवन उपेक्षित, तिरस्कृत एवं हाशिये के समाज को जगाने एवं उसे मुख्यधारा में लाने का प्रयास करते रहे। गुजराती कहानियों में गाँधी जी के जीवन संघर्षों एवं उनके विचारों का प्रतिबिम्बन दिखाई देता है|

नाटक के क्षेत्र में चर्चित भानु भारती जी ने 'गाँधी और 1980 के बाद हिंदी और गुजराती नाटक' विषयक सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि गाँधी जी अद्भुत रूप से इक्कीसवीं शताब्दी में प्रासंगिक हैं। उनकी उपस्थिति नाटक, कहानी, कविता आदि के साथ-साथ हमारे जीवन के हर क्षेत्र में है। अगर उन्हें हम समझ लें तो हम तमाम विसंगितयों, अत्याचारों, तमाम शोषण को समझ सकते हैं। गाँधी जी के विकेन्द्रीकरण से संबंधित मत का औचित्य वर्तमान में बहुत आवश्यक होता जा रहा है। युवा आलोचक मनोज कुमार सिंह ने गाँधी और पाश्चात्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं से संबंधित महत्त्वपूर्ण सूचना देते हुए गाँधी की प्रासंगिकता का रेखांकन किया। मनोज कुमार सिंह ने 'बापू' नाटक, 'गाँधी-नेहरू' और 'गाँधी-टॉलस्टाय' के साथ-साथ अन्य 'संवादों', जो हिन्दुस्तानियों की 'दासता' और 'ग्रामीण तथा शहरी संस्कृति के द्वन्द्व' संबंधित हैं, के माध्यम से गाँधी जी की चिंता को रेखांकित किया । वरिष्ठ गुजराती साहित्यकार सतीश व्यास ने गाँधी और 1980 के हिंदी - गुजराती नाटकों पर चर्चा करते हुए गुजराती साहित्य के नारायण देसाई और दलपत चौहान का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि गाँधी जी ने स्त्री निर्णय को भी महत्त्व और सम्मान दिया। युवा नाट्य निर्देशक आभा गुप्ता ठाकुर ने

(जारी..)

'गाँधी और 1980 के बाद हिंदी - गुजराती नाटकों में हाशिये के समाज' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अपने आलेख में उन्होंने स्पष्ट कहा कि वे इस युग को 'वैचारिक जकड़बंदी से मुक्ति' और 'विशेषणों पर प्रश्न चिह्न' लगाने का समय मानती हैं।

समापन सत्र के अध्यक्ष के रूप में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने 'लार्ड माउंटबेटन' और 'चार्ली चैंपलिन' की आत्मकथाओं के माध्यम से बताया कि विश्व के इन दोनों महान और चर्चित व्यक्तियों ने गाँधी के व्यक्तित्व के सामने अपने को साधारण माना। माधव कौशिक ने कहा कि गाँधी का प्रभाव दुनिया भर में इतना है कि उनकी आत्मकथा दुनिया की लगभग हर भाषाओं में मिल जाएगी। जबकि हम भारतीय गाँधी को आज भी बहुत कम समझ पाए हैं। अंत में, माधव कौशिक ने हरिवंशराय बच्चन की कविताओं का उदाहरण देते हुए कहा कि गाँधी जी ने जिन आदर्शों को जिया उसको अब शायद ही कोई भारतीय जी पाए।

समापन सत्र के विशिष्ट वक्ता अतनु भट्टाचार्य ने गाँधी के विचार पर आधारित हिंदी - गुजराती साहित्य के साथ-साथ अंग्रेजी के उपन्यासकार मुल्कराज आनंद के 'अनटचेबल', भवानी भट्टाचार्य के 'सो मेनी हंगर' और आर.के नारायण के 'वेटिंग फ़ॉर महात्मा' उपन्यासों का सविस्तार उल्लेख किया, जिसमें गाँधी के समय का भारत, द्वितीय विश्वयुद्ध, अंग्रेजी शासन की हृदयविहीनता, बंगाल की भुखमरी आदि की दारुण स्थिति का परिचय प्राप्त होता है । अतनु भट्टाचार्य ने इन उपन्यासों में गाँधी जी के जीवन और आदर्शों का विश्लेषण वैश्विक संदर्भ में किया। आखिर में, इस संगोष्ठी के संयोजक आलोक गुप्त ने साहित्य अकादेमी, आमंत्रित अतिथि विद्वानों और सभागार में उपस्थित अन्य प्रतिभागियों, छात्र-छात्राओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

के. श्रीनिवासराव

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT
150
YEARS OF
CELEBRATING
THE MAHATMA
के संयुक्त तत्त्वावधान में
CUG

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT
साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गुजरात
के संयुक्त तत्त्वावधान में
महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष के अवसर पर आयोजित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
CUG

CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT
150
YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA
साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गुजरात
के संयुक्त तत्त्वावधान में
महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष के अवसर पर आयोजित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
और 1980 के बाद का हिंदी-गुजराती साहित्य
Literature
श्री के.श्रीनिवास राव
श्री माधव कौशिक

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT
के संयुक्त तत्त्वावधान में
CUG

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT
150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA
साहित्य
साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गुजरात
के संयुक्त तत्वावधान में
महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष के अवसर पर आयोजित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी